



Akbar & Salim's Sour Relationship

Salim & Murad bonded over their love for drinks – hatred for Abul Fazl & Akbar's courtiers in chief at mughal court in general.

Heart Attacks In Women

Special Children Present Theatrical Performances

A grandeur of show by fighters at 'Rays'

शिंजो आबे को गोली लगने की खबर से चीन के सोशल मीडिया में जश्न सा माहौल था

यह तथ्य पर्याप्त प्रमाण है शिंजो आबे की सफलता का

—अंजन राय—
—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 8 जुलाई। यह शी के नेतृत्व वाले चीन की कुत्सित अतिराष्ट्रवादी सोच का परिचायक है। जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे पर हुये हमले की खबर पर चीन के इंटरनेट सोशल मीडिया पर जश्न मनाए गए। शिंजो आबे को गोली मार दी गई जिससे उनकी मौत हो गई। लेकिन प्रधानमंत्री के रूप में उनके दो कार्यकालों ने जापान का इतिहास बदल दिया। शिंजो आबे ने जापान के स्वयं को पीछा पहुँचाने वाले आत्म प्रतिबंधों की प्रथा को बदल दिया था। शिंजो आबे याकुसूनी मंदिर गये थे तथा वे जापान के उस शान्तिवादी संविधान को बदलने का माध्यम बने थे तथा इससे जापानी सेना को फिर से देश से बाहर जाने का जोखिम उठाने की अनुमति मिल गई थी। शिंजो आबे की पहले प्रधानमंत्री जो टोकियो के याकुसोनी मंदिर गये थे, जहाँ द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों के अवशेष रखे थे। तब तक, यह मंदिर जापानी प्रधानमंत्रियों की पहुँच से बाहर था।

- द्वितीय विश्व युद्ध हारने के बाद, विजेताओं ने जापान को भारी “अपराध बोध” (गिल्ट) से दबा दिया था। आबे ने 2006 में जापान को इस अपराध बोध से मुक्त कराया।
- शिंजो आबे जापान के पहले प्र.मंत्री बने, याकोसोनी टैम्पिल जाने वाले। याकोसोनी में द्वितीय विश्व युद्ध में मारे गये जापानी सैनिकों की अस्थियां संग्रह करके रखी गयी थीं।
- इसके बाद, उन्होंने जापान की सेना को सुसज्जित करने का एतिहासिक निर्णय लिया। उन्होंने 2006 में, एशिया में “आर्क ऑफ़ डैमोक्रेसी” की परिकल्पना की थी, चीन के आक्रमक रवैये को भांपते हुए। इस “आर्क ऑफ़ डैमोक्रेसी” से क्वाड संगठन, जिसके ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान व भारत सदस्य हैं, का जन्म हुआ।

ठीक यही स्थिति, जापान शान्तिपूर्ण संवैधानिक व्यवस्था की थी, जिसमें स्थाई सैन्य व्यवस्था पर रोक लगी हुई थी। धीरे-धीरे यह कानून हटाया गया, जापान के पास अपनी सेना होने लगी। लेकिन सेना की भूमिका देश के अन्दर तक ही सीमित थी तथा किन्हीं भी परिस्थितियों में वह देश से बाहर नहीं जा सकती थी। यह सब द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापान की भूमिका के अपराध बोध के अवशेष थे। यह राष्ट्रीय चेतना तथा युद्ध के अपराध-बोध का परिचायक था। लेकिन, चीन जापान की हार हो गई थी,



इसलिये उस पर अपराध बोध हावी हो गया था। अगर धुरी ताकतें जीत गई होतीं, तो

कहानी कुछ और ही होती। अगर हम पीछे मुड़कर युद्ध के तुरन्त बाद के जापान की स्थिति पर नजर डालें, तो

जापान के इन दोनों जख्मों पर आबे की प्रतीकात्मक मुद्राओं का महत्व हमारी (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

शिंजो फैक्ट फाइल

- जापान के पूर्व प्रधानमंत्री शिंजो आबे की शुक्रवार को, भारतीय समयानुसार सुबह 8 बजे एक चुनावी सभा के दौरान गोली मारकर हत्या कर दी गई।
- एक पूर्व नौसैनिक ने होम मेड पिस्तौल से पीछे से आकर उन्हें गोली मारी।
- इलाज के दौरान छः घंटे बाद अस्पताल में ही उनकी मौत हो गई।
- शिंजो आबे 9 साल तक जापान के प्रधानमंत्री रहे, वे पहली बार 2007 में तथा 2012 में दूसरी बार प्रधानमंत्री बने।
- अपने प्रधानमंत्रित्व काल में उन्होंने चार बार भारत की यात्रा की।
- शिंजो आबे के नाना भी जापान के प्रधानमंत्री थे तथा उनके दादा जापान के प्रसिद्ध राजनेता रहे थे।
- उनका इलाज कर रही मैडिकल टीम के एक डॉक्टर ने बताया कि, उनको लगी एक गोली सीधे उनके दिल तक पहुंच गई थी।
- उनको गोली मारने वाले, 42 साल के नौसैनिक ने गिरफ्तारी के बाद बताया कि वह शिंजो आबे की नीतियों से बेहद असंतुष्ट था।
- हमलावर शिंजो आबे की सभा में प्रकरा बरकर रहूँचा था।

दिल्ली में, राजस्थान में नेतृत्व परिवर्तन की हवा आंधी से तूफान बनती जा रही है

राजस्थान के प्रभारी अजय माकन ने कुछ समय पूर्व पुरजोर ढंग से कहा था, जुलाई माह में राज्यसभा चुनावों के बाद, हाई कमान निर्णय ले लेगा कि गहलोत को त्याग दिया जाये या आगे चलाया जाये

- शासन के नजदीकी लोग भी अब कहने लगे हैं कि, गहलोत अब यह तपन व तनाव बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं तथा हल्की टिप्पणियां व बातें करने लगे हैं, जो उनकी बुजुर्गियत व वरिष्ठता को शोभा नहीं देता।
- नवीनतम रणनीति है, लगभग अस्सी विधायकों का जत्था, शांति धारीवाल के नेतृत्व में दिल्ली भेजा जाये और दबाव बनाया जाये कि, अगर गहलोत को हटाने का निर्णय हो ही गया है तो, उनके प्रबल समर्थक महेश जोशी को मु.मंत्री पद संभलाया जाये।
- गहलोत किसी तरह, यह स्वीकार करने को तैयार नहीं कि, सचिन पायलट मु.मंत्री बनें। पर अब देखना यह है कि, हाई कमान कब तक उनकी जिद स्वीकार करेगा।

भावना व्यक्तित्व से अजीब काम करवा लेती है। उच्च पदस्थ सूत्र बताते हैं कि अशोक गहलोत चुपचाप से अपना पद नहीं छोड़ देंगे। उन्होंने मुकाबला करने का निर्णय लिया है और स्वयं को बाहर किए जाने की सूरत में वह यह सुनिश्चित करने का प्रत्येक जतन करेंगे कि सचिन पायलट को मुख्यमंत्री ना बनाया जाए। स्वयं को मुख्यमंत्री पद से हटाए

जाने की स्थिति में अपने सुझाव पहले ही देना शुरू कर दिए हैं कि पायलट के अलावा किसी अन्य व्यक्ति को मुख्यमंत्री बनाना चाहिए इसमें अन्य के अलावा एक नाम महेश जोशी का आगे बढ़ाया गया है। योजना कांग्रेस के करीब 8 विधायकों को एकत्रित कर शांति धारीवाल के नेतृत्व में उन्हें दिल्ली भेजकर यह दबाव बनाने की है कि अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री बने रहने दिया जाए। मजदूर बात ये है कि गहलोत ऐसा मानते हैं कि एक बार उन्हें हटाने का निर्णय लिए जाने के बाद भी 80 विधायक उनकी प्रशंसा के गीत गाएंगे। गहलोत यदि सचिन पायलट की पदोन्नति रूकवाने में सक्षम नहीं होते हैं तो प्लान बी पर काम किया जाएगा। इसमें सदन के पलोर टैस्ट में पायलट को उन भाजपा विधायकों की मदद से (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

बीजिंग में वैक्सिनेशन अनिवार्य

—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 8 जुलाई। चीन की राजधानी बीजिंग में लोगों के लिए वैक्सिनेशन अनिवार्य हो गया है खासकर लायब्रेरी, म्यूजियम या अन्य सार्वजनिक स्थलों में प्रवेश के लिए। कोरोना वायरस पर नियंत्रण की लम्बे समय से चली आ रही नीति में सरकार ने फेरबदल किया है।

- करोना वायरस पर नियंत्रण के लिए चीन की नीति लॉक डाउन की ही रही है पर अब वैक्सिनेशन को अनिवार्य करने का फैसला लिया गया है।

अन्य देशों ने कई महीनों पहले ही इस तरह के प्रतिबंध लगा दिए, अब चीन ने भी ऐसे प्रतिबंध घोषित किए हैं जो दर्शाते हैं कि चीन आबादी के बड़े भाग का वैक्सिनेशन करने की दिशा में अग्रसर है। विशेषज्ञों का मत है कि अगर ये प्रयास सफल हुए तो चीन विश्व के लिए दरवाजे खोल देगा और इससे सुस्त पड़ रही अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा। चीन में विकसित वैक्सिनेशन की (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘महाराष्ट्र में पुनः नये सिरे से विधानसभा चुनाव करवायें’

उद्धव ठाकरे ने शिंदे को चुनौती देते हुए कहा, आजमा कर देख लें अगर हमने गलती की है, जनता हमें घर भेज देगी

—डॉ. सतीश मिश्रा—
—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 8 जुलाई। एकनाथ शिंदे द्वारा बगावत करके पार्टी के विधायक दल पर व कब्जा किये जाने के बाद, महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने आज अपने पहले सार्वजनिक संबोधन में राज्य में नये चुनाव कराये जाने की माँग की तथा कहा कि शिवसेना के चुनाव चिन्ह को “कोई नहीं छीन सकता।”

भाजपा तथा मुख्यमंत्री शिंदे के नेतृत्व वाले शिवसेना के विद्रोही गुट को चुनौती देते हुए, ठाकरे ने कहा, “मैं उन्हें चुनौती देता हूँ कि वे आज विधानसभा चुनाव करायें।” अगर हमने कुछ गलत किया है तो लोग हमें घर भेज देंगे और अगर आपको यही करना था तो आपको यह ढाई साल पहले करना चाहिये था तथा वह सम्मानपूर्ण रहा होता। (उस स्थिति में) यह सब होने की कोई जरूरत ही होती।” ठाकरे ने कहा, “ शिवसेना से

- ठाकरे ने शिंदे को निशाना बनाते हुए कहा, ढाई साल से भाजपा मुझे व मेरे परिवार को गाली दे रही थी, तब आप चुप रहे और भाजपा के सम्पर्क में रहे और पार्टी से गहारी की।
- ठाकरे ने यह भी कहा, सोमवार को सुप्रीम कोर्ट हमारी याचिका पर सुनवायी करेगा तथा शिव सेना के ही नहीं, देश में प्रजातंत्र के भविष्य पर निर्णय लेगा।

उसका “तीर-कमान” चुनाव चिन्ह कोई नहीं छीन सकता। वैसे भी, जनता केवल चुनाव चिन्ह को ही नहीं देखते, वे उस व्यक्ति को देखते हैं जिसने चुनाव चिन्ह लिखा।” उन्होंने शिवसेना के विद्रोही गुट पर प्रहार करते हुए कहा कि वे उस समय चुप बैठे थे, जब पिछले द्वाइ वर्षों के दौरान भाजपा उन्हें और उनके परिवार को निशाना बना रही थी तथा “भला-बुरा कह रही थी” उन्होंने शिंदे का नाम लिखे बिना कहा, “आप उनके सम्पर्क में बने रहिये तथा अपनी स्वयं की पार्टी के साथ इसी प्रकार विश्वासघात करते रहिये।” उन्होंने विद्रोहियों के बारे में कहा, कुछ लोगों का कहना है कि अगर उन्हें मातोश्री बुलाया जायेगा तो वे जरूर आएंगे। उनका कहना है कि उनके मन में लिए सम्मान है। मैं आभारी हूँ। लेकिन अगर आप आते तथा मुझसे बात करते तो आपको इस यात्रा की जरूरत नहीं पड़ती। लेकिन अब आप उन लोगों के साथ हैं जिन्होंने मेरे परिवार को गालियाँ दी हैं। उन्होंने हमारी प्रतिष्ठा पर हमला किया है। इसलिये यह निर्णय आप भी करें कि क्या आपका स्नेह एवं सम्मान वास्तविक है।” ठाकरे ने आगे कहा, “मुझे उन 15-16 विधायकों पर गर्व है जो तमाम धमकियों के बावजूद मेरे साथ हैं। यह (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘भाजपा का आंतकियों से संबंध’

—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 8 जुलाई। कांग्रेस शनिवार को देश के 22 शहरों और कस्बों में प्रैस कॉन्फ्रेंस करने जा रही है जिनमें सत्तारूढ़ भाजपा के आंतकवादियों से संबंध का पर्दाफाश किया जाएगा।

- प्रैस कॉन्फ्रेंस को थीम है “ये रिश्ता भाजपा और आंतकवादियों की सांठगांठ का पर्दाफाश करने के लिए कांग्रेस 22 शहरों में प्रैस कॉन्फ्रेंस करने जा रही है, जिसकी थीम है “ये रिश्ता क्या कहलाता है?”

क्या कहलाता है।” पार्टी के पूर्व सांसद तथा राष्ट्रीय प्रवक्ता अजय कुमार मुन्बई में, महासचिव शक्तिरसिंह गोहिल (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

‘खादी व पॉलियेस्टर में क्या फर्क है’

कांग्रेस ने भाजपा सरकार पर व्यंग्य किया कि, खादी से बना तिरंगा, स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक था, पर भाजपा खादी का महत्व क्या समझे

- कांग्रेस के अनुसार, खादी स्वतंत्रता आंदोलन में स्वावलम्बन का प्रतीक थी। इंग्लैण्ड के मैनचेस्टर शहर में निर्मित कपड़े का स्वाभिमानी स्वावलम्बी जवाब।
- कांग्रेस को यह बात कतई गले नहीं उतर रही कि, खादी निर्मित तिरंगे झण्डे का स्थान अब पॉलियेस्टर निर्मित तिरंगा झण्डा लेगा।

की प्रतीक है। एक सीधा प्रहार करते हुए डॉ. कुमार ने कहा कि इन मूल्यों से भाजपा और उसके पूर्ववर्ती अनजान हैं, अनजान हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संघर्ष, राष्ट्रीय ध्वज की डिजाइन या खादी को लोकप्रिय बनाने में कोई भूमिका नहीं निभाई थी और यह पार्टी एक सोचे-समझे तरीके से स्वतंत्रता संग्राम के प्रतीकों को त्याग रही है। कांग्रेस नेता ने स्मरण कराया कि भाजपा हिन्दू महासभा से प्रेरित है, जिसने राष्ट्रवादी शक्तियों— यथा कांग्रेस का विनाश करने के लिए सिंध, बंगाल और नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रांत में मुस्लिम लीग के साथ गठबंधन किए थे। प्रवक्ता ने कहा कि सत्तारूढ़ पार्टी के पितृ संगठन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

ने अपने नागपुर मुख्यालय पर आधी शताब्दी तक तिरंगा फहराने से इंकार किया था। उन्होंने ध्यान दिलाया कि राष्ट्रीय ध्वज का सम्मान करना तो दूर भाजपा ने आर.एस.एस. परिसर में 26 जनवरी 2001 को तिरंगा फहराने का प्रयास कर रहे तीन कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कराया दिया था (केस नम्बर 176, नागपुर)। एक तरफ तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी स्वयं को भारतीय खादी उद्योग के संरक्षक के रूप में पेश करते हैं और उन्होंने पिछले वर्ष अपने “मन की बात” संबोधन में भारतीयों से खादी उत्पाद खरीदने का अनुरोध किया था और दूसरी तरफ, उन्होंने आयोजित मशीन निर्मित एवं पॉलियेस्टर झण्डों की अनुमति देकर खादी की आत्मा और

महात्मा गांधी की विरासत पर प्रहार किया है। उन्होंने कहा कि लाखों कर्मियों को नौकरियों से हाथ धोना सुनिश्चित करते हुए उन्होंने हर घर तिरंगा अभियान का मजाक बनाकर उसे “हर घर में चीन का बना हुआ तिरंगा” बना दिया है। खादी का कारण बनने और स्वयं को एक पॉलियेस्टर मोनोपॉलिस्ट साबित करेंगे। प्रधानमंत्री अन्य भारतीयों को “वोकल फोर लोकल” का लैक्चर देते हैं, लेकिन उनके खुद के निर्णय “शंघाई की महंगाई” से अधिक मेल खाते हैं— चाहे वह स्टेच्यू ऑफ यूनिटी के लिए कांसा आयात करना हो या वर्ष 2021-22 में चीन से आयातों का 45 प्रतिशत (शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मोहन प्रकाश

—राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो—
नई दिल्ली, 8 जुलाई। कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी ने मोहन प्रकाश को महाराष्ट्र जाकर वहां के राजनैतिक घटनाक्रम की जांच कर रिपोर्ट देने को कहा है। ज्ञातव्य है कि हाल ही में

- सोनिया गांधी ने वरिष्ठ नेता मोहन प्रकाश से महाराष्ट्र के राजनैतिक घटनाक्रम की जांच कर तुरंत रिपोर्ट देने को कहा है।

विधानसभा में हुए विश्वासपत्र में कांग्रेस के कुछ विधायक अनुपस्थित थे। पार्टी महासचिव (संगठन) के.सो.वेणु गोपाल ने बताया कि मोहन प्रकाश से जल्द से जल्द रिपोर्ट देने को कहा गया है।